CHAPTER 13

BUDDHIST STUDIES

Doctoral Theses

01. TIWARI (Anju)
Antiquity of Healing Buddha: An Analytical Study.
Supervisor: Dr. SUSMITA
Th 28964

Abstract

This research studies Buddhist medicine as part of India's wider medical and spiritual tradition. It focuses on Bhaisajyaguru, the Healing Buddha and his influence on the understanding of health, compassion and healing. The study shows that Buddhist medicine grew from the foundations of Ayurveda and evolved through interaction with local healing traditions in India, Tibet, China and the Himalayan regions, combining physical treatment with moral and mental discipline. Fieldwork at Men-Tsee-Khang, the Tibetan Medical and Astrological Institute in Dharamshala, documents how these ideas continue in practice. Pulse and urine diagnosis, herbal medicine and mantra recitation are used alongside modern methods such as X-rays and ESR tests. The research finds that Buddhist medicine remains a living system rooted in compassion and awareness. It connects body, mind and karma, and continues to offer a meaningful model of healing that unites ancient traditions with science.

Contents

1. Conceptualising Buddhist Medicine as Ethical and Clinical Practice 2. Early Indian Foundations and the Rise of Buddhist Healing 3. Healing as Ethical Responsibility in Buddhism 4. Buddhist Medical Thought in Dialogue with Modern Research 5. Tibetan Medicine in Practice 6. Final Conclusion — Buddhist Medicine as a Living Ethical and Clinical Tradition Bibliography. Appendices

02. तिवारी (देवेश)
बौद्ध धर्म के विकास में युगान्तकारी परिवर्तन के रूप में द्वितीय नगरीकरण की भूमिका एक : समग्र अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. शब्द प्रकाश
Th 28965

सारांश

बौद्ध धर्म के विकास में युगान्तकारी परिवर्तन के रूप में द्वितीय नगरीकरण की भूमिका : एक समग्र अध्ययन" शीर्षक के अंतर्गत यह शोध प्राचीन भारत में छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवर्तनों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। द्वितीय नगरीकरण के परिणामस्वरूप गंगा घाटी में नगरों का विकास, व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार, मुद्रा प्रचलन तथा नए सामाजिक वर्गों विशेषकर वैश्य एवं शिल्पकार वर्ग का उदय हुआ। इस परिवर्तित सामाजिक संरचना ने वैदिक

कर्मकाण्डों से भिन्न वैकल्पिक धार्मिक विचारधाराओं के उद्भव के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कीं। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म ने एक व्यावहारिक, नैतिक और सामाजिक रूप से समावेशी धर्म के रूप में स्थान प्राप्त किया। नगरीय जीवन की जटिलताओं, सामाजिक असमानताओं तथा आर्थिक परिवर्तन ने ऐसे धर्म की आवश्यकता उत्पन्न की जो सरल आचार, मध्यम मार्ग और व्यक्तिगत आचरण पर बल देता हो। द्वितीय नगरीकरण के कारण विकसित व्यापारिक मार्गों और नगरों विशेषतः मगध जैसे महाजनपदों ने बौद्ध संघों के प्रसार, विहारों की स्थापना तथा धर्म के संस्थागत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अध्ययन इस तथ्य का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार नगरीकरण ने न केवल बौद्ध धर्म के उद्भव को गति दी, बल्कि उसके संगठनात्मक ढाँचे, उपदेश पद्धति और जनस्वीकृति को भी प्रभावित किया। साथ ही यह शोध सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक संरचना और धार्मिक नवाचार के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए यह स्थापित करता है कि द्वितीय नगरीकरण बौद्ध धर्म के विकास में एक युगान्तकारी ऐतिहासिक प्रक्रिया थी, जिसने भारतीय समाज में वैचारिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की नई दिशा प्रदान की।

विषय सूची

1. द्वितीय नगरीकरण : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और स्वरूप 2. बौध धर्म का उद्भव और प्रारंभिक स्वरूप 3. बौद्ध धर्म के विकास में द्वितीय नगरीकरण की युगान्तकारी भूमिका 4. नगरीकरण और बौध धर्म का परस्पर संबंध 5. नगरीकरण के बहुआयामी प्रभाव और बौध धर्म। निष्कर्ष। ग्रंथ सूची।

03. दुबे (सीमा)
21वीं सदी में हिंदी साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव: एक अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. अमरजीव लोचन
Th 28966

सारांश

हिंदी साहित्य का भारतीय उपमहाद्वीप की दार्शनिक, आध्यात्मिक और नैतिक परंपराओं के साथ गहन और गहनतर संबंध रहा है। इन परंपराओं में बौद्ध धर्म का एक विशिष्ट और स्थायी स्थान है। भारतीय चिंतन पर इसके प्रारंभिक प्रभाव से लेकर आधुनिक पुनर्याश्क्याओं तक, बौद्ध धर्म ने दुख, करुणा, समता और मुक्ति पर वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करके साहित्यक काया को निरंतर आकार दिया है। 21वीं सदी में, हिंदी साहित्य और बौद्ध धर्म के बीच का अंतर्संबंध और भी प्रासंगिक हो गया है, क्योंकि लेखक तेजी से वैश्वीकरण की ओर अग्रसर होते विश्व में सामाजिक अन्याय, जातिगत भेदभाव, भावनात्मक अलगाव, हिंसा, पर्यावरणीय संकट और मानवीय मूल्यों की खोज जैसी समकालीन चिंताओं को संबोधित करने के लिए बौद्ध दर्शन की ओर रुख कर रहे हैं। 21वीं सदी में हिंदी साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ करुणा, समता और आत्ममुक्ति के विचार कथाओं और कविताओं संचारित करते हैं। बौद्ध दृष्टि सामाजिक अन्याय, हिंसा और असमानता के खलाफ वैचारिक चेतना पैदा करती है। यह धर्म आत्मसम्मान, आत्मनिर्माण और मुक्ति की दिशा में मार्गदर्शक बनता है। भाषा, शैली और कथात्मक संरचना में बौद्ध मूल्य नैतिक और दार्शनिक गहराई जोड़ते हैं। समग्रतः, बौद्ध धर्म 21वीं सदी के हिंदी साहित्य को सामाजिक, नैतिक और वैचारिक दृष्टि से समृद्ध करता है। 21वीं सदी में, हिंदी साहित्य और बौद्ध धर्म के बीच संबंध विषयगत गहराई और वैचारिक विस्तार दोनों में व्यापक हो गया है। समकालीन हिंदी लेखक वैश्वीकरण, उदारीवादी अर्थव्यवस्था, तकनीकी परिवर्तन और बढ़ते सामाजिक ध्रुवीकरण से चिंतित एक जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में काम करते हैं। इस संदर्भ में, बौद्ध धर्म करुणा, सजगता और नैतिक उत्तरदायित्व पर आधारित एक प्रतिकथा प्रस्तुत करता है। कई कवि,

उपन्यासकार और निबंधकार बौद्ध दर्शन का उपयोग उपभोक्तावाद, हिंसा और पारंपरिक विचार की आलोचना करने के साथ-साथ स्व-अस्तित्व, संयम और सह-अस्तित्व के मूल्यों पर जोर देने के लिए करते हैं। अत्यधिक इच्छा और आसक्ति का बौद्ध अस्वीकार आधुनिक अस्तित्व संबद्ध चिंता और नैतिक व्यवस्था के साहित्यिक अन्वेषणों के साथ गहराई से प्रतिध्वनित होता है।

विषय सूची

1. बौद्ध धर्म और हिंदी साहित्य की परंपरा 2. बौध धर्म के दार्शनिक आधारः एक वैचारिक ढांचा 3. 21वीं सदी की हिंदी कविता में बौद्ध धर्म 4. समकालीन हिंदी कथा साहित्य और आत्मकथा में बोद्ध विचार 5. बौध साहित्य में धर्म और समाज। निष्कर्ष। ग्रंथ सूची।